Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material: SANSKRIT

B.A. Part I, Paper I

Topic: "'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग में अंकित द्रौपदी के भाव"

(शेषभाग)

'शठे शाठ्यं समाचरेत्' का उपदेश देते हुए द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो कपटी लोगों के प्रति कपट का आचरण नहीं करते वे नष्ट हो जाते हैं। दुष्ट लोग अरक्षित लोगों को वैसे ही मार डालते हैं जैसे कवच आदि द्वारा अरक्षित शरीर में बाण प्रवेश कर प्राण ले लेते हैं।

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥ (३०)

इतना ही नहीं द्रौपदी युधिष्ठिर के गौरवपूर्ण और समृद्धशाली कुल परम्परा का स्मरण दिलाते हुए कहती है कि:

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेन्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्॥ (३१)

सर्वस्यापि जनस्य स्वकुलाभिमानः भवति एव। अतः तस्य कुलस्य अभिवृद्धये स सदापि प्रयत्नवान् भवति। कुलक्रमादागतं यत्किमपि भवतु तत् अमूल्यं शेवधिमिव रक्षति। तस्य कुलस्य श्रीः आत्मनः वधूः इव, धर्मपत्नी इव। तां कथं वा त्यक्तुं शक्नुयात्? किन्तु भवता तादृशः त्यागः कृतः भवता। कलत्रापहार इव लक्ष्म्यपहारोऽपि मानघातिकर एव, विशेषतः राज्ञाम्, अत अनुपेक्षणीयोऽयं दुर्योधनकृतः राज्यलक्ष्म्यपहारः। इह जगति न कोऽपि त्वत्तोऽधिको विवेकशून्यो दृश्यते, यस्त्वं विचारवानपि कुलीनां स्नेहवतीं स्त्रियमिव वंशक्रमागतां राजलक्ष्मीं त्यक्तवानसि।

→

Signature: ....

DATE: 13·8·20

EXPT. NO.

इस प्रकार राजलक्ष्मी की एक कुलीना आर्या के साथ उपमा देते हुए द्रौपदी युधिष्ठिर को धिक्कारते हुए कहती है कि आपने राजलक्ष्मी का शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दिया है, ऐसा भला कौन हो सकता है?

इतना ही नहीं युधिष्ठिर के क्रोध को भड़काने हेतु द्रौपदी कहती है कि :

भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि ।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः ॥(32)

हे नराधिप ! नरदेव ! इस प्रकार के मानी जनों द्वारा निन्दित मार्ग पर पुनः पुनः चलने वाले आपको उद्दीप्त क्रोध उसी प्रकार क्यों नहीं जलाता, जिस प्रकार लपटवाली आग सूखे हुए शमी के पेड़ को जला देती है। शरीरधारी प्राणी स्वयं ही उस व्यक्ति के अधीन हो जाते हैं, जिसका क्रोध अमोघ होता है और जो विपत्तियों का नाश करता है, व्यक्ति के क्रोध हीन होने पर प्रेम उत्पन्न होने के कारण आदर नहीं होता और उसकी शत्रुता से भय नहीं होता। अथवा लोग उसके मित्र होने या शत्रु होने का आदर नहीं करते।

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः ।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः ॥33॥

इसी क्रम में भीम जैसे बलशाली, विशालकाय वीर पुरुष के धूलिधूसरित अवस्था की ओर युधिष्ठिर का ध्यान आकृष्ट करती हुई द्रौपदी कहती है कि :

परिभ्रमंल्लोहितचन्दनोचितः पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः ।
महारथः सत्यधनस्य मानसं दुनोति कच्चिदयं वृकोदरः ॥ 35॥

लाल चन्दन लगाने वाले, महान रथ पर चलनेवाले ये भीम (अब) धूलिधूसरित, पैदल चलते हुए, पर्वतों के बीच घूमते हुए क्या सत्यव्रती आपके मन में सन्ताप नहीं उत्पन्न करते? अर्थात् इन्हें देखकर क्या आपके मन में सन्ताप नहीं होता?

क्रमशः

BIT

Signature: 13/8/20